April 2015-Jun 2015, Vol. I , No. II 164-169 e ISSN 2394-9449

Electronic Journal of Advanced Research
An International Peer Review E- Journal of Advanced Research
www.ejar.co.in

बघेलखण्ड के ऐतिहासिक सेनानी

डॉ.अजय शंकर पाण्डेय[1]
1. शा.ठा.रण.सिंह महा.रीवा (म.प्र.)

Received: 12/06/2015 **Revised:** 21/06/2015 **Accepted:** 30/06/2015

शोध सारांश

मध्यप्रदेश के रीवा, सतना, सीधी और शहडोल जिले को संपूर्ण क्षेत्र के बोल–चाल की भाषा में बघेल वंश के राजाओं के कारण बघेल खण्ड कहतें हैं। 1857 ई.के स्वतंत्रता संग्राम से लेकर देश के ब्रिटिश दासता से आजादी तक यह क्षेत्र स्वतंत्रता आंदोलन की मुख्य धारा से मजबूती से जुड़ा रहा। स्वतंत्रता आंदोलन के प्रारंभ में इस भू–भाग में उच्च शिक्षा की व्यवस्था नहीं थी। अतः यहॉ के युवक पड़ोसी प्रांत उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद, बनारस , लखनऊ आदि शहरों में शिक्षा प्राप्त करने जाते थे। वहॉ ये युवक ब्रिटिश भारत में चल रहे राष्ट्रीय आंदोलन के प्रभाव में आए। स्वतंत्रता आंदोलन में गति प्रदान करने के लिए इस भू–भाग में 30 मई 1931 को बघेल खण्ड जिला कांग्रेस कमेटी की स्थापना की गई। इस भू–भाग में स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं ने भी विशेष योगदान दिया।

की–वर्ड

01. बघेलखण्ड
02. दासता
03. चार बघेल सरदार
04. बघेलखण्ड जिला कांग्रेस कमेटी
05. विद्यार्थी आंदोलन

मध्यप्रदेश के रीवा, सतना ,सीधी और शहडोल जिलों के संपूर्ण क्षेत्र को साधारण बोलचाल की भाषा में बघेलखण्ड कहते हैं। इस भू–भाग का बघेलखंड नाम बघेल वंश के राजाओं के कारण पड़ा, जिनकी राजधानी रीवा थी।

1857 ई. के स्वतंत्रता संग्राम से लेकर देश की ब्रिटिश दासता से आजादी तक यह क्षेत्र स्वतंत्रता संग्राम आंदोलन की मुख्य धारा से मजबूती से जुड़ा रहा। संपूर्ण ऐतिहासिक सेनानियों का विवरण देना संभव नहीं है। फिर भी मेरा प्रयास है कि प्रमुख स्वतंत्रता सेनानियों का परिचय दे सकूँ।

1857 के स्वतंत्रता संग्राम का विस्तार झासी से सागर, दमोह, जबलपुर होते हुये , इस भू–भाग में भी बड़ी तेजी से हुआ। इस स्वतंत्रता संग्राम में चार बघेल सरदार क्रमशः श्यामशाह, रणमत सिंह , धीर सिंह , पंजाब सिंह विद्रोह में खुलकर सामने आ गए। खमरिया के लाल श्यामशाह बागियों का नेतृत्व कर रहे थे। श्यामशाह के शहीद होने के पश्चात लाल रणमत सिंह ने बघेलखण्ड में स्वतंत्रता सेनानियों का नेतृत्व किया। लाल रणमत सिंह मनकहरी (कोठी) के बघेल ठाकुर थे तथा रीवा नरेश के प्रति वफादार थे डभौरा के ब्राह्मण पवाईदार रंजीत राय दीक्षित रणमत सिंह को बचाने में अंग्रेजो के द्वारा मारे गये। लाल रणमत सिंह लंबे अंतराल तक अंग्रेजों से संघर्ष करते रहे तथा बाद में उन्हे फासी दे दी गयी। इनके अलावा विजय राघवगढ़ के ठाकुर सरयू प्रसाद सिंह, बरौधा के श्री दलगंजन सिंह , सोहागपुर के ठाकुर गरूण सिंह एवं भरत सिंह ,हारौल हरनन्द राय, श्री मनराज सिंह दुबे तथा अमर शहीद ठाकुर जगमोहन सिह , लाल लोचन सिह और पहलवान सिंह चंदेल प्रमुख थे। पूरे देश की तरह इस भू–भाग में भी 1857 के स्वतंत्रता आंदोलन को दबा दिया गया।

1885 में स्वतंत्रता प्राप्ति के उद्देश्य की प्राप्ति के लिये राष्ट्रीय स्तर पर इंडियन नेशनल कांग्रेस की स्थापना हुई । उसके प्रारम्भिक वर्षो में देश के अन्य भागों के समान यहॉ के नवयुवकों का झुकाव भी इस संगठन के प्रति रहा। इस समय चूकि इस भू–भाग में उच्च शिक्षा की व्यवस्था नहीं थी। अतः यहॉ के युवक पड़ोसी प्रांत उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद , बनारस, लखनऊ आदि शहरों में शिक्षा प्राप्त करने जाते थे। वहॉ ये युवक बिटिश भारत में चल रहे राष्ट्रीय आंदोलन के प्रभाव में आये। इनमें प्रमुख थे। लाल

यादवेन्द्र सिंह (पिता श्री रघवुर सिंह , जन्म 5 मार्च 1904 ई.मृत्यु 17 नवम्बर 1963 जन्म स्थान ग्राम–माडौ शिक्षा स्नातक तथ विधि)., कप्तान अवधेश प्रताप सिंह (पिता चन्द्र शेखर सिंह , रामपुर बघेलान जन्म अक्टूबर 1898 मृत्यु 1967 ई.) चन्द्रमौलि प्रसाद मड़रिहा (पाती) , बृजराज सिंह , कुँवर साहब गंगेव। वहीं इन सबका संबंध पं. नेहरू से स्थापित हुआ। लाल यादवेन्द्र सिंह पर पं. नेहरू का विशेष प्रभाव पड़ा। और वे यूथ लीग में शामिल हुये तथा आगे चलकर उन्हे यूथ लीग का उपाध्यक्ष बनाया गया। इसी समय रीवा में विद्यार्थियों ने भी आंदोलन की तैयारी शुरू की। उनमें प्रमुख रूप से महेश प्रसाद श्रीवास्तव, लाल बिहारी सिंह , पुष्कर सिंह, ब्रजराज सिंह तिवारी (पिता स्व.राजभानु सिंह तिवारी जन्म 19 अप्रैल 1915 एम.ए.राजनीतिशास्त्र फरेंदा मनिकवार) अमोलक चन्द्रजैन, लोकनाथ, राम बिहारी (बरवाही) अभयराज सिंह (सुजवार) आदि थे। लाल यादवेन्द्र सिंह प्रयाग से इनका नेतृत्व करते रहे। 1930 के आंदोलन के समय उच्च शिक्षा प्राप्त कर यादवेन्द्र सिंह और कप्तान अवधेश प्रताप सिंह रीवा आ गये और यहॉ सक्रिय हुये । 30 मई 1931 को बघेल खंड जिला कांग्रेस कमेटी की स्थापना की गई। लाल यादवेन्द्र सिंह अध्यक्ष, कप्तान अवधेश प्रताप सिंह मंत्री, राजभानु सिंह तिवारी कोषाध्यक्ष बनाये गये । पं. शंभूनाथ शुक्ला कार्यकारिणी सदस्य बनाये गये। उधर यद्यपि हारौल नर्मदा प्रसाद सिंह रीवा राज्य की सीमा से बाहर इलाहाबाद चले गये। फिर भी रीवा राज्य की राजनैतिक गतिविधियों में काफी दिलचस्पी लेते रहे। इसी बीच जुलाई 1931 में बघेलखंड कांग्रेस जिला कमेटी ने राज्य में उत्तरदायी शासन स्थापित करने की मॉग उठायी। फलतः 11 जुलाई को कप्तान अवधेश प्रताप सिंह को गिरफ्तार कर लिया गया तब आंदोलन और तेज हुआ। रीवा प्रशासन ने, लाल यादवेन्द्र सिंह ,राजभानु सिंह तिवारी , मगली प्रसाद हलवाई, बिहारी लाल अग्रवाल , गनपत प्रसाद मारवाही, लक्ष्मीचन्द्र नारद, महेश प्रसाद , पं.भुग्गी प्रसाद , पं.त्रिपुरारी प्रसाद, ठाकुर प्रसाद तिवारी , लाल बिहारी सिंह ,बाबूलाल जैन , पंचरत्न , लाल पुष्कर सिंह आदि को गिरफ्तार किया गया। महाराज गुलाब सिंह ने दिल्ली से वापस आते ही आंदोलन के नेताओं को रिहा कर दिया।

मार्च 1932 तक 20000 लोग कांग्रेस के सक्रिय कार्यकर्ता बन चुके थे तथा राज्य की प्रत्येक तहसील तथा गॉव में कांग्रेस की शाखाओं की स्थापना हो चुकी थी। तत्पश्चात कांग्रेस की नई कार्य समिति का चुनाव हुआ। कप्तान अवधेश प्रताप सिंह सभापति राजभानु

सिंह तिवारी उपसभापति लाल यादवेन्द्र सिंह , लाल फतेह बहादुर मंत्री, लाल वंशपति सिंह कोषाध्यक्ष ,पं.शंभुनाथ शुक्ल तथा पं. हरिवंश प्रसाद मुख्य सदस्य बनाये गये। बघेलखंड जिला कांग्रेस कमेटी के नेतृत्व में संभाग में निरंतर राष्ट्र की मुख्य धारा के साथ स्वतंत्रता आंदोलन चलता रहा।

1940 में रामपुर बघेलान के लाल चन्द्रकांत सिंह जो उस समय काशी विश्वविद्यालय के छात्र थे। व्यक्तिगत् सत्याग्रह में भाग लिया। फलतः 3 माह की सजा व 300 रू.का जुर्माना हुआ। 1941–42 तक इस भू–भाग में शैक्षणिक संस्थाओं और सुविधाओं का काफी विस्तार हो चुका था। । ब्रिटिश सरकार ने 17 फरवरी 1942 को एक विज्ञप्ति जारी कर घोषणा की कि महाराजा गुलाब सिंह के सभी अधिकार स्थगित कर दिये गये। तथा कहा गया कि राज्य के सभी अधिकार वाइसराय में निहित होंगे। 18 फरवरी को यह समाचार रीवा वासियों को मालुम पड़ा और संपूर्ण रीवा में ब्रिटिश शासन के इस कार्य के खिलाफ सामूहिक जन आंदोलन प्रारंभ हो गया। इसी संदर्भ में बघेल खण्ड जिला कांग्रेस कमेटी के तत्कालीन अध्यक्ष पं.शंभूनाथ शुक्ला, उपाध्यक्ष राजभानु सिंह तिवारी एवं सचिव कप्तान अवधेश प्रताप सिंह और लाल यादवेन्द्र सिंह इलाहाबाद गये और हारोल नर्मदा प्रसाद सिंह के साथ 6 मार्च 1942 को पं.नेहरू से मिले और यहॉ की स्थिति से अवगत कराया। पं. नेहरू ने इन नेताओं को सलाह दी कि रीवा के प्रश्न पर कांग्रेस की सामान्य नीतियों कार्यक्रमों तथा राष्ट्रीय अंतराष्ट्रीय स्थिति के परिपेक्ष्य में ही विचार करना चाहिये। कांग्रेस को किसी शासक के व्यक्तिगत मामलों को लेकर आंदोलन नहीं करना चाहिये। चूकि महाराज रीवा के ऊपर कुछ गंभीर आरोप लगाये गये हैं और उनकी जॉच भी जारी है। अतः इस जॉच की निंदा नहीं की जा सकती है, हम इतना ही कह सकते है कि जॉच पूरी तरह निष्पक्षतापूर्वक न्यायिक ढंग से की जाय । कांग्रेस का राज्य में उत्तरदायी सरकार हेतु कार्य करना चाहिये। तत्पश्चात बघेलखण्ड जिला कांग्रेस कमेटी राज्य में उत्तरदायी सरकार की स्थापना हेतु कार्यरत रही, इस हेतु राज्य के युवा विद्यार्थी गोविन्द नारायण सिंह ने दो बुलेटिनें लिखी। (1) विद्यार्थी वर्ग से विनय(2) रीवा में खेतिहरों से विनती । इधर 08 अगस्त को भारत छोड़ो आंदोलन अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी का प्रस्ताव पारित हुआ। राष्ट्र के नाम संदेश में महात्मा गॉधी ने करो या मरो का नारा दिया । इसका

पूर्ण प्रभाव इस भू–भाग पर भी पड़ा। यहॉ 9 अगस्त को विशाल सभा का आयोजन किया गया। लाल मर्दन सिंह व राजमणि प्रसाद को गिरफ्तार किया गया।

10 अगस्त को राजभानु सिंह तिवारी तथा अवध बिहारी लाल वकील को गिरफ्तार किया गया। रीवा दिवस मनाया गया। बघेलखंड विद्यार्थी संघ की स्थापना हुई। अध्यक्ष ओंकार प्रसाद तथा सचिव केशव सिंह निर्वाचित हुए। रीवा प्रशासन द्वारा इसी बीच 12 अगस्त को लाल कमलेश्वर सिंह, महावीर प्रसाद भट्ट, सुदर्शन प्रसाद, श्रीमती विष्णूकांत देवी, श्रीमती राजकुमारी देवी, पं.भैरवदीन मिश्र तथा लाल कृष्णपाल सिंह को गिरफ्तार किया। 12 अगस्त की रात को ही यह समाचार प्राप्त हुआ कि इस क्षेत्र के मेधावी छात्र लाल पद्मधर सिंह प्रयाग में इस आंदोलन में भाग लेते हुए शहीद हो गये। इस कारण इस आंदोलन का विस्तार और तेजी से हुआ। 16 मई तक सभी वरिष्ठ नेता गिरफ्तार हो चुके थे। अब आंदोलन का नेतृत्व विद्यार्थियों और नवयुवकों के हाथ में आ गया। 15 अगस्त 1942 को वाराणसी से इस क्षेत्र के प्रमुख्य विद्यार्थी नेता श्री बृजराज सिंह तिवारी रीवा आ गये और अपने सहयोगियों के साथ बनारस की तरह आंदोलन को गति प्रदान की।19 सितम्बर को कुछ पत्रकारों, नागरिकों, शिक्षकों तथा विद्यार्थियों की गिरफ्तारी की गई। उनमें रीवा से प्रकाशित प्रमुख साप्ताहिक ''प्रकाश''के संम्पादक ठाकुर अर्जुन सिंह प्रमुख थे। फलतः छात्र उत्तेजित हुए रीवा के रिकार्ड रूम में आग लगा दी बुढार में भी प्रदर्शन के सिलसिले में कृष्णपाल सिंह तथा कुछ अन्य छात्रों को गिरफ्तार किया गया। सतना में भी शासकीय सम्पत्ति को नुकसान पहुॅचाया गया। सतना में गिरफ्तार छात्रों को सतना कोतवाली, माधौगढ और रीवा जिले में 9 माह रखा गया। मनमोहन सिंह मनिकवार, रीवा जेल में जाकर भोजन और उनके खर्चे की गुप्त रूप से व्यवस्था करते रहे। यमुना प्रसाद शास्त्री का भी 1942 के आंदोलन में योगदान रहा।

इस भू–भाग में स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं ने भी विशेष योगदान दिया। जिनमें विशेष उल्लेखनीय है। श्रीमती चम्पा देवी पत्नी लाल महावीर सिंह 1942 में इंदिरा जी के साथ नैनी जेल में रहीं। श्रीमती कृष्णा कुमारी पत्नी यादवेंन्द्र सिंह 1942 श्रीमती जानकी देवी पुत्री हारौल नर्मदा प्रसाद सिंह, श्रीमती सत्यवती पिता यादवेंन्द्र सिंह, श्रीमती इंदिरा सिंह पत्नी लाल वीरेंन्द्र सिंह, श्री तारा देवी पत्नी स्व.आमानंन्द जी मिश्र आदि।

संदर्भ ग्रंथ :–

01. रीवा राज्य का इतिहास –गुरू राम प्यारे अग्निहोत्री।

02. रीवा राज्य का इतिहास – बाबू रघुवर प्रसाद

03. रीवा संभाग (बघेलखण्ड)का स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास, कांग्रेस शताब्दी समारोह समिति, रीवा संभाग ,1985 ई., संपादक –डॉ.ब्रजगोपाल शुक्ल

04. डॉ.ए.एच.निजामी – चार बघेल सरदार, शोध–पत्र